कहानी 5

सुजाता और रीता बचपन की सहेलियां हैं। वे गांव के स्कूल में पांचवी कक्षा तक साथ–साथ पढ़ती थीं। सुजाता गरीब परिवार की थी और उसके पिता खेत में मजदूरी करते थे, जबकि रीता के परिवार की आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर थी, उसके पिता बढ़ई थे। दोनों सहेलियां पढ़ने में अच्छी थीं। कभी एक पहले स्थान पर आती तो कभी दूसरी।

पर एक दिन किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि दोनों को एक दूसरे से अलग होना पड़ा। सुजाता के पिता ने पढ़ाई छुड़वा कर उसे शहर में उसकी मौसी के पास भेजने का फैसला किया। मौसी शहर में लोगों के घरों में बर्तन धोने और झाड़ू–पोछा का काम करती थी और चाहती थी कि सुजाता भी जल्दी से ये काम सीख जाये और अपने परिवार के लिये थोड़ा पैसा कमाने लगे। रीता को सुजाता के जाने का बड़ा दुःख हुआ, दोनों सहेलियां गले मिलकर फूट–फूट कर रोईं।

पर रीता ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। उसने 12वीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली और फिर दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त कर पड़ोस के गांव में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका बन गयी। इस बीच उसने सुजाता की खोज–खबर लेने की बहुत कोशिश की, पर उसे केवल इतना पता चल पाया कि सुजाता का पूरा परिवार शहर चला गया है और मात्र 15 साल की उम्र में ही सुजाता की शादी कर दी गयी है और वह अभी भी घरों में नौकरानी का काम करती है।

इस घटना को कई वर्ष गुज़र गये। रीता का भी विवाह हो चुका है। उसका पति सामाजिक कार्यकर्ता और ग्राम पंचायत का सदस्य है। पति–पत्नी, दोनों बाल संरक्षण समिति के सदस्य भी हैं।

एक दिन रीता कुछ ज़रूरी सामान लेने अपने पति के साथ शहर गई थी। जब वह वापस जाने के लिये बस स्टैण्ड पर खड़ी थी तो अचानक एक औरत अपने दो छोटे बच्चों के साथ आकर सामने खड़ी हो गई। रीता समझ नहीं पाई कि ये कौन उसके सामने आ गया है? "रीता ने ध्यान से देखा तो कुछ जानी पहचानी सी सूरत लगी। उस औरत ने कहा कि, रीता तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं सुजाता हूं।" "सुजाता! चौक कर रीता ने कहा, ये तुमने क्या हाल बना रखा है?"

बहुत दिनों बाद अपनी सहेली को देखकर, सुजाता उसे गले लगाकर रोने लगी। न सुजाता के शरीर पर अच्छे कपड़े थे और न उसके बच्चों के शरीर पर। उम्र से बड़ी लग रही थी।

सुजाता ने उसे अपनी दुखद कहानी सुनाईः शहर में मौसी का पहले ही बुरा हाल था, वह खुद बहुत परेशान थी। मुझे भी उनके साथ मिलकर बहुत काम करना पड़ा। जब मेरे माता–पिता भी शहर आकर बस गये, तो उन्होंने मेरी शादी एक बड़ी उम्र के आदमी से करा दी क्योंकि उसे दहेज नहीं चाहिये था। उसकी भी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। पैसे की कमी के कारण वह ज्यादातर गुस्से में रहता था और मुझे मारता–पीटता था। मुझे डर था कि कहीं वो पैसे के लिये मुझसे वेश्यावृत्ति और मेरे बच्चों से बाल मजदूरी न करवाने लगे। तो अब मैं वहां से निकल आई। पर मैं अपने माता–पिता से भी किसी तरह की मदद की अपेक्षा नहीं कर सकती।

रीता अपनी सहेली की हालत देखकर बहुत दुखी हुई। उसने कहा कि तुम अपना सामान बांधो, दो दिन में मैं और मेरे पति तुम्हें वापस गांव ले जाने आयेंगे। तुम्हारा घर तो वहां है ही। गांव के स्वयं सहायता समूह में तुम कई आय बढ़ाने वाले कामों में हिस्सा ले सकती हो। तुम्हारे बच्चों को हम विद्यालय प्रबंधन समिति से बात करके स्कूल में दाखिला करवा देंगे।

गांव में पहुंचने के बाद जहां एक ओर सुजाता, स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अपने परिवार को संभालने लगी, वहीं दूसरी ओर उसका बेटा स्कूल में और छोटी बेटी आंगनवाड़ी में स्कूल–पूर्व शिक्षा के लिये जाने लगी है।

1

2

3

4

5
BUS STOP

6

7

8

चर्चा के बिन्दुः

- बच्चों को पढ़ाना क्यों जरूरी है?
- अपने बच्चों की जिम्मेदारी रिश्तेदारों को सौंपना क्या सही बात है?
- जबरन शोषण कराना या किसी गलत काम के लिये कोई मजबूर करे तो क्या करना चाहिये?

Concept and Design: New Concept Information Systems Pvt. Ltd., New Delhi

Supported by

unicef

unite for children